SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

निराला जी के कथा साहित्य में नारी विमर्श

उर्मिला वर्मा, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
श्यामलाल साकेत, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
उर्मिला वर्मा, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
श्यामलाल साकेत, हिंदी विभाग,
एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. स्वशासी एवं उत्कृष्ट ठा. रणमत सिंह,
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 29/07/2021
Revised on : -----
Accepted on : 05/08/2021
Plagiarism : 01% on 30/07/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Friday, July 30, 2021
Statistics: 11 words Plagiarized / 1104 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Þfujkyk th ds dFkk lkfgR; esa ukjh foe"kZ Þ Lkkjka"k %& euq"; dh cqfu;knh vo/kkj.kk esa dSls ifjorZu gksrk gSA bls le>us ds fy, vk/kqfud ;qxhu ukjh psruk ds fo'k;kax v/;;u ,oa lekt esa ukjh dh ok:rfod fLFkfr dk vkdyu djuk ,oa fujkyk th us tks Hkh ukjh ds mRFkku esa vius dFkk lkfgR; ds ek/;e ls lekt esa ukjh psruk dks vkxs fodfIr djrs gS .oa oSfnd dk e/;dkyhu Hkkjrh; lekt ls gVdj os ukjh dks lekt esa ;kjkjh dk vf/kdkj iznku djuk pkgrs Fks ftlls ukjh dh fLFkfr vPNh gks tc; bl lekftd fparu dks tkx`r fd;k rFkk lekt eas ukjh mRFkku ds fy, vius ys[kuh ÞykbZA pkgs mudh d`fr vydk ;k fu:iek gks mUgksaus ukjh ds mRFkku esa

शोध सार

देश समाज में नारी की दशा सदैव दयनीय बनाकर रखी गई। निराला की साहित्यिक रचनाओं में आज भी वही स्थिति है। आधुनिक युगीन नारी चेतना के विषयांग अध्ययन एवं समाज में नारी की वास्तविक स्थिति का आंकलन एवं नारी के उत्थान में निराला जी ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज में नारी चेतना को आगे बढ़ाया है। वैदिकीय मध्यकालीन भारतीय समाज से हटकर वे नारी को समाज में बराबरी का अधिकार प्रदान करना चाहते थे जिससे नारी की स्थिति अच्छी हो जाय। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने समाज में इस प्रकार से समाजिक चिंतन को जागृत करने के साथ ही समाज में नारी उत्थान के लिए अपने लेखनी में उस प्रकाश को शामिल किया जो सामाजिक दशा की अंधेरी गुफाओं को प्रज्वालित किया। अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी उत्थान में उनका संघर्ष अतुल्यनीय है।

मुख्य शब्द

निराला, नारी उत्थान, चिंतन, हिन्दी साहित्य, सामाजिक अधिकार.

निराला जी हिन्दी साहित्य जगत के ऐसे जागरूक साहित्यकार थे जिन्होनें केवल नाम से ही महानता नही हासिल की बल्कि उन्होनें कर्म में भी प्रधानता हासिल की। अपने सशक्त लेखनी से उन्होनें समाज की उपेक्षा झेल रही नारी को मुख्य जगह दी तथा अपने काव्य तथा कथा साहित्य में नारी के मुक्ति को आवाज को समाज के सामने प्रस्तुत किया जो उनके लिए एक प्रकार चुनौती थी तथा उस चुनौती में स्वीकार करते हुए नारी मुक्ति की आवाज बने। अगर हम उनके उपन्यास रचना की दृष्टि से देखे तो काव्य में विविधता विद्यमान है। निराला जी अपने समस्त उपन्यासों में विभिन्न प्रकार की समस्याओं

के अलावा नारी के उत्थान को सशक्त रूप में चित्रण करते हुए समाज के सामने प्रस्तुत किया है। जैसे अप्सरा में निराला जी ने मुख्य नायिका कनक (वेश्यापुत्री) के माध्यम से वेश्या की समस्याओं के बारे में सामाज को अवगत कराया है। कनक का राजकुमार से हिन्दू रीति–रिवाजो द्वारा प्रेम विवाह कर वेश्या विवाह को उचित माना। जहाँ "अलका" में उन्होंने विधवा समस्या को रेखांकित करते हुए वीणा और अर्जित को परिणय सूत्र में बांधकर समाज को परम्परागत रूढ़ियों से मुक्त होने का रास्ता दिखाया।

निरूपमा में जमीदारों की मनोवृत्ति का चित्रण किया जिसमें जमीदार पुत्री निरूपमा का सामान्य किन्तु डि. लिट की उपाधि प्राप्त रही कृष्णकुमार से विवाह कराकर निराला जी ने रूढ़िवादी नियमों के खण्डन की बात पर जोर दिया।

इसी प्रकार निराला जी ने समस्त उपन्यास में विविध विषयों को आधार बनाकर उपन्यास तथा कहानी साहित्य की रचना की। निराला का गद्य साहित्य जगत में एक विशिष्ट स्थान है, उन्होंने सम्पूर्ण गद्य विद्याओं में सक्रिय योगदान दिया चाहे वह उपन्यास, रेखाचित्र, कहानी, निबंध, जीवनी, अनुवाद आदि हो। उनका सम्पूर्ण गद्य साहित्य वैविध्यपूर्ण है। निराला जी के गद्य साहित्य की यह विशेषता थी कि उन्होंने अपने गद्य सृजन में विभिन्न रूपों की मौलिकता को नष्ट होने नही दिया। छायावादी कवियों का मुख्य वर्ण विषय प्रकृति है। वह उनके सुख–दुख के संगनी है। निराला जी ने अपने काव्य में "बादलराग" कविताओं में प्राकृतिक पदार्थो पर चेतना का आरोप किया है तथा जूही की कली में उन्होंने मानवीय करण का परिचय दिया है जिससे हम यह कह सकते है कि राष्ट्रप्रेम के साथ–साथ निराला जी ने नारी मुक्ति जागरण का स्वर समाज के सामने चित्रण किया है। निराला जी ऐसी सामाजिक व्यवस्था को समाप्त करने के लिये सक्रिय थे जो समाज में ऊँच–नीच और जाति–पाति तथा द्विजशूद्र एवं नारी विषमता की नींव पर टिकी हो। इस व्यवस्था के प्रति उनका आक्रोश तथा स्वभाविक रूप से कही भी बनावटी नही दिखा।

निराला जी के नारी चिंतन की प्रमुख विशेषता यह भी थी कि उनके लिये सामाजिक क्रांति शुरू होती थी इन निम्न जातियों से और राजनीतिक आन्दोलन की सफलता के लिये वे इस व्यवस्था के प्रति उनका आक्रोश सहज एवं स्वभाविक था उनमें कहीं भी बनावट की गुंजाइश नही थी। निराला जी के चिंतन में यह भी विशेषता थी कि उनके लिये सामाजिक क्रांति एवं नारी चेतना शुरू होती थी। इन निम्न जातियों से और राजनीतिक आन्दोलन की सफलता के लिये वे सामाजिक क्रांति को अनिवार्य मानते थे। निराला हमेशा से जाति प्रथा और नारी चेतना के उत्थान के लिये उन्होंने समाज को समानता के आधार पर संगठित करने का प्रयास किया। उन्होंने कुल्लीभाट और बिल्लेसुर के स्वभाव की परिश्रमशीलता, महत्वकांक्षा, दृढ़ता, आशावादी वृत्ति आदि विशेषताओं का विश्लेषण समाज के संदर्भ में किया। कुल्ली भाट में उन्होंने अपनी साधारणता में की असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी था। कुल्ली का चरित्र मानव प्रधान है, कुल्ली एक सामान्य मानव होते हुये भी किसी महापुरूषों से कम नही है। उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह विपरीत परिस्थितियों में भी जीवन भर संघर्ष करता रहा।

इसी प्रकार बिल्लेसुर बकरिहा में भी निराला ने एक ऐसे चरित्र को चित्रित किया है जिसके जीवन में बाधाएँ आती है परन्तु विचलित होकर हार मानकर वह बैठता नही है। वह धैर्य पूर्वक उसका सामना कर जीवन में आगे बढ़ता जा रहा है।

सूर्यकांत निराला जी ने अपने प्रखर व्यक्तित्व एवं ओजपूर्ण लेखनी को हिन्दी साहित्य क्षेत्र में लेकर आये एवं क्रांतिकारी निराला को सामाजिक एवं साहित्यक क्षेत्र में किसी प्रकार के रूढ़िगत बंधन स्वीकार नही थे। इसलिये किसी वाद विशेष के साथ बँधकर चलना उनकी प्रकृति के प्रतिकूल था। अतः किसी वाद की सीमा में अविरूद्ध करके निराला के कथा साहित्य का आकलन करना तर्कसंगत प्रतीत नही होता। अतः यह कहा जा सकता है कि हमारे देश में पुरूष प्रधान सामाजिक व्यवस्था के आधीन नारी का शोषण एवं उत्पीड़न हमेशा से हो रहा है। हमारे देश में स्त्रियों की शिक्षा के अभाव में कैसी दुर्दशा हो रही है। प्रतिदिन भारत वर्ष का आकाश स्त्रियों के कृदन्त से गूँजता रहता है। युवती एवं विधवाओं नारी की आँसुओं का प्रवाह प्रतिदिन बहता जाता है जो भारतीय पितृ संतात्मक

पारिवारिक सामाजिक संरचना में नारी कैद रही है, उसके उत्थान के लिये महाप्राण निराला जी ने अपने सम्पूर्ण कथा साहित्य में जो विचार एवं नारी चिंतन को व्यक्त किया है। वह अतुलनीय है। हमेशा इस महाकवि के योगदान को हमारा समाज ऋणी रहेगा।

निष्कर्ष

हमारे देश में स्त्रियों की शिक्षा के अभाव में दुर्दशा हो रही है। प्रतिदिन भारत वर्ष का आकाश स्त्रियों के कृदन्त से गूँजता रहता है। युवती एवं विधवा नारियों के आँसुओं का प्रवाह प्रतिदिन बह रहा है। भारतीय पितृसंतात्मक पारिवारिक सामाजिक संरचना में नारी कैद है, उनके उत्थान के लिये निराला जी ने अपने सम्पूर्ण कथा साहित्य में जो विचार एवं नारी चिंतन को व्यक्त किया है, वह अतुलनीय है। इस महाकवि के महानतम योगदानों से हमारा देश कभी मुक्त नही हो पायेगा व सदैव आभारी रहेगा।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रामविलास, ''निराला की साहित्य साधना'', पृष्ठ सं.51।
2. चतुर्वेदी, जगदीश्वर, *''स्त्री अस्मितः साहित्य विचार धारा''*, पृष्ठ सं. –34।
3. जोशी, गोमा, *''भारत में स्त्री असमानता एवं विमर्श''*, पृष्ठ सं. 107।
4. कृष्णलाल, *''आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास''*, पृष्ठ सं. 149–150।
5. शुक्ल, सामदेव, *''निराला के उपन्यास''* पृष्ठ सं. 24।

****